International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 10, Issue 12, Dec 2023
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

महाभारत की ऐतिहासिकता के प्रमाण

कुलदीप सिंह

शोधार्थी, शिक्षा विभाग

जनादन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डिंड–टू–बी)विश्वविद्यालय उदयपुर

महाभारत भारतीय संस्कृति का अद्भुत महाआख्यान है। 18 पर्वो वाले इस महाग्रन्थ में 'खिल पर्व' (हरिवंश पुराण) सहित लगभग एक लाख श्लोक हैं। इसीलिए इसे 'शतसाहस्री संहिता' भी कहा जाता है। इसे 'पंचमवेद' की संज्ञा भी प्राप्त है। इसके सम्बन्ध में कहा जाता है कि जो कुछ भारत में है वह इसमें उपलब्ध है और जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है। इसमें हजारों कूट श्लोक हैं। इसके आख्यान बड़े मनोहर हैं और तत्वासन बड़ा गम्भीर है। इतिहास, धर्म, दर्शन, नीति, भूगोल, राजनीति और पुराणतत्व का जैसा समन्वय इस ग्रन्थ में उपलब्ध है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। 'इसमें प्राचीन काल की अनेक ऐतिहासिक कथाएं एक ही स्थान में प्रधित की गयी हैं प्राचीनकाल में अश्वमेध आदि जो दीर्घ सत्र अथवा बहुत दिनों तक चलने वाले यज्ञ हुआ करते थे, उन यज्ञों में अवकाश के समय बहुत सी ऐतिहासिक गाथाएं अथवा आख्यान कहने अथवा पढ़ने की प्रथा थी। ऐसे अवसरों पर पढ़े जाने वाले अनेक ऐतिहासिक आख्यान महाभारत में एकत्र किये गये हैं।''[1]

इसकी ऐतिहासिकता असंदिग्ध है। यह उदात्त मूल्यों की प्रतिष्ठा करता है। महाभारतकार को हम अपने समय के सारे प्रश्नों और समस्याओं से जूझता और उनके समाधान परक उत्तर तलाशता पाते हैं। इसके साथ ही भूगोल–इतिहास, राजनीति और

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

धर्मानुशासन का विचित्र संयोग है। साथ ही सब वर्णन मर्यादा के अनुसार हैं। इसीलिए यह ग्रन्थ उत्कृष्ट महाकाव्य की गरिमा को धारण करता है। महाकाव्य के सब गुणों से संयुक्त यह ग्रन्थ पृथ्वी के सब ग्रन्थों में अद्वितीय है। भाषा इसकी प्रौढ़ और गम्भीर है। सरलता और प्रौढ़ता का इसमें अद्‌भुत मेल है।[2]

ऐतिहासिक दृष्टि से महाभारत अद्वितीय महत्व रखता है। महाभारत को छोड़कर एक भी ऐसा भारतीय ग्रन्थ नहीं जिसमें ब्राह्मणकाल से लेकर यूनानियों के आक्रमण तक की भारतीय संस्कृति का ज्ञान सम्पूर्णतः हो सके। ब्राह्मण ग्रन्थों, पुराणों तथा सूत्रों में लिखे हुए ज्ञान को महाभारत ने एक स्थान पर मनोहारी शैली में ग्रथित कर दिया है। महभारत की ऐतिहासिकता पर विचार करने से पूर्व यह आवश्यक है कि यह जान लिया जाय कि क्या प्राचीन भारतीय, इतिहास शब्द और उसके स्वरूप से परिचित थे? इस प्रश्न का उत्तर हमें अथर्ववेद के मंत्रों में मिल जाता है। वहां कहा गया हैः–

''स बृहतीं दिशमनुव्यंचतल। तमितिहासाश्च

पुराणंच गाथाश्च, नाराशंसीश्चामुव्यलन्।

इतिहासस्य चवै, स पुराणस्य च गाथानां च

नाराशंसीनां च प्रिय धामं भवति य् एवं वेद''[3]

अर्थात् महत्वाभिलाषी पुरुष जब बृहतीम (महत्य) की ओर चलता है तब इतिहास, पुराण, गाथा और नाराशंसी उसके अनुगामी बन जाते हैं एवं इस बात को जो पुरुष जानता है यह इतिहास, पुराण, गाथा और नाराशंसी एवं वेद का प्रियधाम (वास स्थान) बन जाता है।

यहां इतिहास, पुराण, गाथा और नाराशंसी चार शब्दों का प्रयोग है। चारों का स्वरूप एवं प्रकृति अलग–अलग है। अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय वैदिक काल से ही इतिहास और उसके स्वरूप से परिचित थे। स्वयं महाभारतकार ने इतिहास के स्वरूप को बताते हुए कहा है –

धर्मार्थं काममोक्षाणांमुपदेश समन्वितम्।

पुर्ववृत्त कथायुक्तमितिहास प्रचक्षते।।[4]

अर्थात् इतिहास वह विद्या है जिसमें प्राचीन इतिवृत्त के साथ–साथ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का उपदेश हो। यही नहीं महाभारतकार इतिहास के महत्व को प्रतिपादित करते हुए यह भी कहता है–

इतिहास प्रदीपेन मोहावरणघातिना

लोकगर्भगृहं कृत्स्नं यथावत सम्प्रकाशितम्।[5]

इतिहास एक जाज्वल्यमान दीपक है। यह मोह का अन्धकार मिटाकर लोक के अन्तःकरण रूप सम्पूर्ण अन्तरंग गृह को भलीभांति प्रकाशित कर देता है।

स्पष्ट रूप से महाभारतकार इतिहास के महत्व से भलीभांति परिचित है, ऐसा समझा जा सकता है। अब महाभारत की अपनी ऐतिहासिकता पर विचार करें। आज ज्ञान की समग्रता पर विश्वास किया जाने लगा है। इतिहास, धर्म, दर्शन, नीतिशास्त्र, समाजशास्त्र नृतत्व विज्ञान, मनोविज्ञान और विज्ञान निकट आये हैं। हर क्षेत्र में ज्ञान के नये आयाम तलाशे जा रहे हैं।

इतिहास के सम्बन्ध में कहा जाने लगा है कि 'इतिहास तथ्यों का संकलन नहीं अपितु तथ्यों की व्याख्या है।' जी. वैरेकली ने इतिहास को लेकर कहा है, ''हम जो इतिहास पढ़ते हैं, हालांकि यह तथ्यों पर आधारित है, ठीक–ठीक कहा जाय तो एकदम यथा तथ्य नहीं है, बल्कि स्वीकृत फैसलों का एक सिलसिला है।''[6] इस बदले हुए उत्तर आधुनिकतावादी दृ ष्टिकोण सं महाभारत की ऐतिहासिकता असंदिग्ध हो जाती है।

महाभारत के तीन रचनाकार हैं, तीन ही उसके नाम हैं और तीन स्थानों से उसका प्रारम्भ माना जाता है। तीन रचनाकार हैं– कृष्ण द्वैपायन व्यास, उनके शिष्य वैशम्पायन तथा सौति। तीन नाम हैं, जय, भारत एवं महाभारत तथा मनु, आस्तीक एवं उपरिचर ये तीन इसके प्रारम्भ हैं। इन तीनों की साक्षी स्वयं महाभारत देता है। 'जय' नाम का उद्घोष तो स्वयं मंगलाचरण में ही हो जाता है। मंगलाचरण है –

नारायणं नमस्कृत्य नरंचैव नरोत्तमम्।

देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्।।[7]

नारायण को अर्थात् श्रीकृष्ण को तथा नरों में श्रेष्ठ जो नर अर्थात् अर्जुन, उसको नमस्कार करके और सरस्वती देवी को भी नमस्कार करके अनन्तर 'जय' नाम ग्रन्थ को पढ़ना चाहिए।

बड़ी कुशलता से व्यास ने इस मंगलाचरण में काव्य–नायक नर–नारायण (कृष्ण–अर्जुन) जो काव्य के विषय हैं उनकी जय तथा वाकू देवी को नमन। तीनों को एक साथ गूंथकर ग्रन्थ का नाम 'जय' भी बता दिया है।मान्यता यह है कि महाभारत के कथानक में अनुस्यूत कूट श्लोक व्यास विरचित हैं जिनकी संख्या लगभग 8800 है। बाद में वैशम्पायन ने इसके कलेवर में वृद्धि की तब इसका नाम 'भारत' हो गया। फिर उग्रश्रवा के पुत्र सौति ने इसमें अपने काल तक प्रचलित सभी पुरावृत्त और गाथाएं में जोड़ दी तब यह बृहद आकार और वर्तमान स्वरूप का 'महाभारत' ग्रंथ बन गया।

किसी ग्रन्थ की ऐतिहासिकता पर विचार करते समय चार विन्दु विचारणीय हैं (1) काल (2) पात्र (3) स्थान और (4) घटना।

महाभारत के काल को लेकर विद्वान एकमत नहीं हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास और संस्कृति के मूर्धन्य विद्वान डॉ. भगवतशरण उपाध्याय ने व्यास को काल परिगणन से मानव जगत का प्रथम इतिहासकार तथा प्रथम सम्पादक माना है[8] परन्तु ये महाभारत का समय 15वीं शताब्दी ई०पू० मानते हैं।

महाभारत के भीष्म पर्व, द्रोणपर्व, उद्योगपर्व, शल्य पर्व तथा अनुशासनपर्व के कुछ श्लोकों के आधार पर अध्यापक प्रबोध चन्द्र सेनगुप्त ने भारत युद्ध का काल ई० पू० 2449 वर्ष निर्धारित किया है।

चालुक्यवंशीय राजा पुलकेशिन द्वितीय का एक शिलालेख दक्षिण के कलान्दी अर्थात् बीजापुर के ऐहोल स्थान के मेगुटी नामक एक जैन मंदिर में प्राप्त हुआ था। उसके अक्षर दाक्षिणात्य हैं, वह शिलालेख है–

त्रिशंत्सु त्रिसहस्त्रेषु भारतादाहवादितः।

सप्ताब्दशतयुक्तेषु श (ग) तेष्वन्देषु पच्चसु।

पंचाशत्सु कलौ काले षट्सु पच्चशतासुच

समासु समतीतासु शकनामपि मृजुजाम्।[9]

इन श्लोकों का अर्थ किया जाता है, 'भारत युद्ध से 3753 वर्ष बीत जाने पर जब कलि में शकों के 556 वर्ष व्यतीत हुए थे।'श्री भगवद्दन्त ने इस सम्बन्ध में लिखा है, ''हमें इस अर्थ में थोड़ा सन्देह है। फिर भी इससे इतना ज्ञात होता है कि शक संवत 556 अथवा सन् 634 में भारत में दक्षिण के कई विद्वान भारत युद्ध को ईसा से 3100 वर्ष पहले मानते थे।''[10]

सन् 1912 में निधानपुर में मिले ताम्रपत्र में नरकासुर का पुत्र भगदत्त (जिसने महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध किया था) तथा भगदत्त का पुत्र बज्रदत्त को बताया गया है। इनके 3000 वर्ष बाद का समय राजा पुण्यवर्मा का निर्धारित किया गया है। इस आधार पर पण्डित भगवद्दन्त जी ने महाभारत युद्ध का समय 2700 ई० पू० अनुमानित किया है। चिन्तामणि विनायक वैद्य ने कुछ अन्य भारतीय एवं पाश्चात्य मनीषियों द्वारा महाभारत युद्ध का समय निर्धारित करने वाले मतों का उल्लेख किया है। उनके अनुसार (1) स्व. मोडक ने ज्योतिष व नक्षत्रीय गणना के आधार पर यह समय 5000 ई०पू०, (2) कुछ ने 3100 ई०पू०, (3) कुछ आर्यसमाजी विद्वान वराहमिहिर तथा कश्मीर के पंडित कल्हण की 'राजतरंगिणी' के अनुसार शक संवत से 2526 वर्ष पहले, (4) रमेशचन्द्र मजूमदार एवं कुछ पाश्चात्य विद्वान यह समय 1400 ई० पू० तथा (5) मद्रासी विद्वान विलण्डी अय्यर महाभारत युद्ध का समय कुछ अन्य प्रमाणों के आधार पर 14 अक्टूबर 1194 ई०पू० निर्धारित करते हैं।''[11] परन्तु आश्चर्यजनक यह है कि विद्वानों ने इस कालनिर्धारण में दो पुष्ट और अकाट्य प्रमाणों की उपेक्षा की है। वे हैं (1) युधिष्ठिर संवत तथा (2) श्रीकृष्ण संवत ।

काल गणना में कल्प, मन्वन्तर और युगादि के वाद जो सर्वाधिक वैज्ञानिक इकाई है, वह संवत है। भारत में अनेक संवत प्रचलित हैं। अनेक महान ऋषियों और राजाओं के नाम से भी संवत प्रचलित हैं। इनमें प्रमुख संवत 15 हैं। (1) कल्पाब्द, (2) सृष्टि संवत (1,955885113), (3) वामन, (4) राम, (5) श्रीकृष्ण, (6) युधिष्ठिर, (7) बौद्ध, (8) महावीर जैन संवत, (9) शंकराचार्य, (10) शालिवाहन, (11) कलचुरी, (12) बलभी, (13) फसली, (14) बंगला, तया (15) हर्षाव्द ।

श्रीकृष्ण संवत इस समय 5239 चल रहा है जो 11 अप्रैल चौत्र प्रतिपदा से 5240 प्रारम्भ हो जायेगा। इसी तरह युधिष्ठिर संवत् 5114 चल रहा है जो 11 अप्रैल से 5115 प्रारम्भ हो जायेगा।

''नवीन संवत चलाने की शास्त्रीय विधि यह है कि जिस नरेश को अपना संवत चलाना हो, उसे संवत चलाने के दिन से पूर्व कम से कम अपने पूरे राज्य में जितने भी लोग किसी के ऋणी हों उनका ऋण अपनी ओर से चुका देना चाहिए।''[12]

इस आधार पर श्रीकृष्ण ने अपना संवत द्वारका पहुंचकर वहां यादव गणराज्य सुस्थापित करके चलाया होगा। युधिष्ठिर ने संवत महाभारत–युद्ध की समाप्ति के बाद अश्वमेध यज्ञ में ऋषियों व मुनियों से अनुमति लेकर अपने नाम से संवत प्रचलित किया होगा। वैद्य जी ने श्रीकृष्ण की जीवन सम्बन्धी घटनाओं का उल्लेख करते हुए उनकी आयु 120 वर्ष मानी है। वे महाभारत युद्ध का समय 3101 ई०पू० मानते हैं। इस दृष्टि से ये दोनों संवत युधिष्ठिर तथा श्रीकृष्ण के अस्तित्व को प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए पर्याप्त पुष्ट प्रमाण बन जाते हैं।

वैद्य जी के अनुसार उन्होंने 18 वर्ष की अवस्था में कंस का वध कर दिया था। इसके उपरान्त उन्हें लगातार प्रति वर्ष जरासंघ के 17 आक्रमणों को झेलना पड़ा अर्थात् लगभग 35–36 वर्ष की अवस्था में वे द्वारिका पहुंचे। वहां द्वारिका बसाने और गणराज्य को व्यवस्थित करने में उन जैसे संगठन कुश व रण–कुशल व्यक्ति को भी 7–8 वर्ष तो लगे होंगे। 45–50 की अवस्था में उनकी ख्याति सम्पूर्ण भारत में फैल चुकी थी तभी उन्होंने अपना संवत प्रचलित किया। इसके पश्चात् वे 70–75 वर्ष और जीये और उनके जीवन में महत्वपूर्ण घटनायें घटित

हुई। महाभारत युद्ध की समाप्ति के बाद यादवों का विनाश उन्हें अपनी आंखों से देखना पड़ा। युधिष्ठिर संवत अर्जुन के पौत्र जनमेजय ने चलाया था। महाभारत के युद्ध के उपरान्त पाण्डव युद्ध तो जीत गये परन्तु उसमें भयंकर महाविनाश हुआ। युद्ध के उपरान्त उन्होंने राज्याभिषेक तथा एक अश्वमेध यज्ञ भी कर लिया। परन्तु राज्य में अव्यवस्था व अराजकता फैल गयी। इसका कुछ प्रमाण महाभारत से ही मिल जाता है। श्रीकृष्ण–निधन के बाद यादव–नारियों को अपनी अभिरक्षा में साथ ले जा रहे अर्जुन से आभीरों–भीलों ने उन्हें लूट लिया था। यह पाण्डवों के राज्य की अराजकता और उनके घटते नियन्त्रण का प्रमाण है। फिर परीक्षित को राज्य सौंपकर वे हिमालय चले गय। परीक्षित के राज्य में नागों ने विद्रोह किया (नागों और आर्यों के पारस्परिक विरोध के प्रमाण महाभारत में बिखरे पड़े हैं) और परीक्षित को मार दिया। फिर जनमेजय राज्याभिषिक्त हुआ। वह अत्यन्त प्रतापी सम्राट था। उसने नागों पर सैन्य अभियान किया, उनकी बस्तियों को उजाड़ा तथा नाग–युवकों का जीवित अग्निदाह किया। नागों का पूरी तरह दमन करके फिर उसने बड़ा यज्ञ किया और उसी यज्ञ में 'युधिष्ठिर संवत' चलाया। इस सारे घटनाक्रम में 125 वर्ष का समय लगना स्वाभाविक है, इसीलिए श्रीकृष्ण संवत और युधिष्ठिर संवत में 125 वर्ष का अन्तर दिखाई पड़ता है। हमारा मानना है कि इन दोनों संवतों से बड़ा महाभारत की ऐतिहासिकता का और कोईप्रमाण क्या होगा?

यों तो श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर के नाम से प्रचलित संवत ही उनको ऐतिहासिक व्यक्ति सिद्ध करने वाले प्रमाण हैं परन्तु ई० पू० चौथी शताब्दी में चन्द्रगुप्त मौर्य की सभा के यूनानी राजदूत मेगास्थनीज ने भी मथुरा, द्वारका, यमुना तथा श्रीकृष्ण पूजा का उल्लेख किया है जो उस समय तक श्रीकृष्ण के भगवान रूप में स्थापित हो जाने का प्रमाण है। डॉ० कनिंघम को वृष्णि (कृष्ण का वंश) राज्य की एक रजत मुद्रा मिली थी जो ब्रिटिश संग्रहालय लंदन में सुरक्षित है। गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) के आर्य संन्यासी तथा पुरातत्वविद स्वामी ओउमानन्द को लुधियाना के पास उच्चापिंड (सुनेत) नामक स्थान में वृष्णिगणराज्य की दस मुद्राएं और मिल गई जो गुरुकुल झज्जर में सुरक्षित हैं। इन मुवाओं पर 'वृष्णि राजन्यगणस्य' अंकित है। उन पर हाथी, सिंह, सुदर्शन चक्र, गदा, घुसल और शेख अंकित हैं।[13]

जहां तक स्थानों का प्रश्न है। पाण्डयों की राजधानी इन्दप्रस्थ (दिल्ली) आज भी स्थित है। इसका ऐतिहासिक अस्तित्व तमाम भारतीय ग्रन्थों से प्रमाणित है। दिल्ली स्थित पाण्डचों के किले को लेकर पुरातत्वविदों द्वारा शोध की आवश्यकता है। महाभारत युद्ध की घटना के सम्बन्ध में सभी भारतीय एवं पाश्चात्य मनीषी उसको ऐतिहासिक घटना मानते हैं। यहां डॉ. भगवत शरण उपाध्याय का भत उद्धृत करना हमें सभीचीन लगता है, ''महाभारत युद्ध की घटना के ऐतिह्य में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता... परीक्षित, जनमेजय और अन्य पांडवो के नाम अर्थववेद और ब्राह्मण ग्रन्थों में मिलते है।

सन्दर्भ

- महाभारत मीमांसा–चिन्तामणि विनायक वैद्य– पृ०–1 हरियाणा साहित्य अकादमी वण्डीगढ़ 1990
- धर्मोरक्षित–आचार्य चतुरसेन शास्त्री– पृ० 349 प्रभात प्रकाशन चावड़ी बाजार दिल्ली– 1981
- अथर्ववेद काण्ड 15 अध्याय 1, सूत्र 6 मन्त्र 110–1
- महाभारत
- वही आदिपर्व 1/87
- हिस्ट्री इन चेंजिंग वर्ल्ड (1959)– जीवेटेकली–पृ०–14
- महाभारत आदिपर्व 1/1
- प्राचीन भारत का इतिहास डॉ० भगवतशरण उपाध्याय पृ० 1–2 प्रन्यमाला कार्यालय पटना–1949
- ऐपिग्राफिया इण्डिका– भाग 3 पृ०–7
- भारत का इतिहास– श्री भागवत, पंचंद प्रेस लिमिटेड मॉडल टाउन (पंजाब) संवत् 2003 वि.
- महाभारत मीमांसा–पृ० 8–9
- कल्याण–हिन्दू संस्कृति अंक– आलेख हिन्दू संवत, वर्ष मास और वार, लेखक ज्योतिर्विद–२० देवकीनन्दन खण्डेलवाल10–756
- (1) भारत सावित्री भाग–3, वासुदेव शरण अग्रवाल